भाजपा नेतृत्व अवसरवादी, चाटुकार, विलासी नेताओं से घिरा : साध्वी उमा भारती

भारतीय जनता पार्टी में असंतोष का ज्वालामुखी फटने लगा

— आलोक मेहता —

छतरपुर (म.प्र.), १४ अप्रैल। सत्ता के सिंहासन पर पहुँचने का सपना देख रही भारतीय जनता पार्टी में अटलजी गुटों के वर्चस्व के विरुद्ध असंतोष का ज्वालामुखी अभी से फटने लगा है। सिद्धान्त और समर्पित नेताओं तथा कार्यकर्ताओं की भावनाओं को साफ करते हुए भारतीय जनता युवा मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा भाजपा की प्रखर अभियानकर्ता साध्वी उमा भारती ने पार्टी नेतृत्व की विश्वासघाती चौकड़ी पर सीधे प्रहार करते हुए कहा है कि 'हमारे बड़े नेताओं को अवसरवादी, चाटुकार, विलासी और समझौतावादियों ने घेर लिया है। इसी कारण बम्बई बम कांड के अभियुक्त दाऊद इब्राहिम से जुड़े हथियारों के सौदागर अदनान खाशोगी की आवभगत करने वाले जे.के. जैन को दिल्ली में लोकसभा का प्रत्याशी बना दिया गया। मालूम थोड़े कर गई, लेकिन सांड को सींग मारने की छूट दे दी गई है।

खजुराहो संसदीय क्षेत्र से पहली बार चुनाव लड़ रही ३० वर्षीय सुश्री उमा भारती इस बार विजय के लिए दिन-रात जनसम्पर्क में लगी हुई हैं। उन्हें इस बात का अहसास है कि इस बार न तो राम लहर है और न ही भाजपा में पहले जैसी एकता। फलस्वरूप वे तो भाजपा को समस्त और नेतिगत मुद्दों पर मात दिलाने के कारण वह चुनाव लड़ने को भी तैयार नहीं थीं। फिर भी भाजपाध्यक्ष दबाव ने उन्हें उम्मीदवार बनना पड़ा। इस चुनाव में भाजपा परिवार गिराने के लिए हुई सीधी आलोचकाओं के तमगे उनके साथ लगे हुए हैं। पिछले रविवार २१ अप्रैल को उनके मेरी भेंट हुई तो उनका पहला सवाल था— 'जामनी मस्जिद की घटना पर आपने भी मेरे विरुद्ध बहुत लिखा था। लेकिन मेरे लिए नाम भी अयोध्या, काशी, मथुरा के मंदिरों का बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे समझौतावादी नेता चाहे बोलते रहें, मैं नहीं काटा सकती।'

भाजपा को सही मार्ग पर ले जाने की तैयारी : छतरपुर में घर से चुनाव अभियान पर जाते हुए साध्वी उमा भारती अपने आमज के साथ।

चित्र : हिन्दुस्तान

भाजपा की दुरभिसंधियों और समझौतावादी रवैये को अनुचित ठहराते हुए सुश्री उमा भारती ने कहा कि 'सत्ता समझौते करने से बेहतर है कि पार्टी चुनाव में हार जाए। मुझे साफ चाहते हमारा निश्चय था कि हम शून्य से फिर शुरू कर लेंगे, लेकिन सिद्धान्तों से समझौता नहीं करेंगे। पर अब हमारा नेतृत्व इस बात पर नहीं टिक रहा है। हमारी पार्टी में चापलूस हाकमोंडों का प्रभाव बढ़ गया है। चिकने-चुपड़े चेहरे वाले या एयर कंडीशन में बैठकर सिगार फूंकने वाले लोग कार्यकर्ताओं का जनता का दर्द नहीं समझ सकते हैं। सिद्धान्त कार्यकर्ताओं का केंद्र हमारे साथ विचारधारा के आधार जुड़ा है। हम उससे पीछे हटकर एक मुखौटा भले ही जीत जाएं, दूसरी सुबह से मुंह नहीं मिलेंगे।'

भाजपा नेतृत्व के बड़े-बड़े दावों और दिल-बहलों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए उमा भारती ने कहा— 'दिन बहुत पहले एक अंग्रेजी चित्रपट देखी थी, उसका हीरो एक द्वीप में रहता था। वह पूरे विश्व पर राज करना चाहता था लेकिन उसकी दुनिया उस द्वीप तक ही सीमित थी। इसी तरह हमारे कुछ बड़े नेता अवसरवादियों, चाटुकारों, विलासिताप्रिय जीवन जीने वालों, लफ्फाजी करने वालों से घिर रहे हैं और उन्हें समाज की असली समस्याओं का अहसास तक नहीं है।

(उमा भारती से हुई पूरी बातचीत पृष्ठ ९ पर)

मुद्दों से हटने के कारण दुःखी होने वाले वे वह अकेली नहीं हैं। मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार जैसे राज्यों में असंतुष्ट नेताओं और कार्यकर्ताओं की बहुत बड़ी संख्या है। नेतृत्व के महाबली के लिए वह सीधे श्री लालकृष्ण आडवाणी, उनके साथ मिल महाशक्ति प्रमोद महाजन, सुंदरलाल पटवा या कुशाभाऊ ठाकरे का नाम नहीं लेती है, लेकिन उनके तौर-तरीकों पर तीखी टिप्पणियां करती है। रेल-सिकंदर और कैमरे के सामने भाजपा के पतन कारणों का लेखा-जोखा देते हुए वे उन्हें कोई हिचक नहीं लगी। एक आशंका आवाज भाजपा की इस सफलोई के लिए कुछ लोग उन्हें चुनाव में मुकाबला पहुंचाने का प्रयास न करें।

लगभग दैनिक मिनट की बातचीत में साध्वी उमा भारती ने भाजपा में उभरी बुराइयों के प्रमुख, एनरॉन जैसे आर्थिक मुद्दे पर दुरभिसंधि तथा राजनैतिक स्तर, मंदिर निर्माण के संकल्प से मुकरजाने, ईमानदार और सिद्धान्त लोगों को किनारे कर अपराधी तत्वों से सीधे संबंध रखने वालों को तरजीह दिए जाने की खुले शब्दों में भर्त्सना की।

राम वर्मा की क्रोटी की तरह से राष्ट्रीय स्तर मेलक संघ तथा विश्वकल्याण संस्थान जिसके से जुड़े श्री एकनाथ रानाडे की प्रेरणा तथा भाजपा नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी के प्रोत्साहन से हिन्दू धर्म, संस्कृति और समाज के लिए समर्पित उमा भारती अपनी नेता के बदले कुछ नहीं लेना चाहतीं। इमेलिए वह सिद्धान्तों और आदर्शों के लिए दिग्गज नेताओं से टकराने को तैयार हैं। उनका कहना है कि 'अभी कुछ समय से हमारी पार्टी में बड़े नेताओं के आसपास कुछ ऐसे लोगों का घेरा हो गया है, जिनका जनहित से जुड़े कार्यकर्ताओं से कुछ लेना-देना नहीं है। वे घोर से काम करने वालों, हल चलाने वालों, गाय चराने वालों या मजदूरों का दुःख-दर्द नहीं जानते हैं।'

साध्वी उमा भारती का सीधे कहना था है कि गरीब के मुंह के साथ समाज के कमजोर वर्ग, महिलाओं, हरिजनों, आदिवासियों आदि के कल्याण के कार्यों को प्राथमिकता देने में कहीं कोई कमियाँ नहीं होनी चाहिए लेकिन इन समस्याओं को देखने और समझने के लिए एक दृष्टि चाहिए। इस समय हमारे नेतृत्वकर्ताओं के पास इस दृष्टि की ही कमी हो गई है।'

भाजपा की दुरभिसंधियों और समझौतावादी रवैये को अनुचित ठहराते हुए सुश्री उमा भारती ने कहा कि 'सत्ता समझौते करने से बेहतर है कि पार्टी चुनाव में हार जाए। मुझे साफ चाहते हमारा निश्चय था कि हम शून्य से फिर शुरू कर लेंगे, लेकिन सिद्धान्तों से समझौता नहीं करेंगे। पर अब हमारा नेतृत्व इस बात पर नहीं टिक रहा है। हमारी पार्टी में चापलूस हाकमोंडों का प्रभाव बढ़ गया है। चिकने-चुपड़े चेहरे वाले या एयर कंडीशन में बैठकर सिगार फूंकने वाले लोग कार्यकर्ताओं का जनता का दर्द नहीं समझ सकते हैं। सिद्धान्त कार्यकर्ताओं का केंद्र हमारे साथ विचारधारा के आधार जुड़ा है। हम उससे पीछे हटकर एक मुखौटा भले ही जीत जाएं, दूसरी सुबह से मुंह नहीं मिलेंगे।'

भाजपा नेतृत्व के बड़े-बड़े दावों और दिल-बहलों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए उमा भारती ने कहा— 'दिन बहुत पहले एक अंग्रेजी चित्रपट देखी थी, उसका हीरो एक द्वीप में रहता था। वह पूरे विश्व पर राज करना चाहता था लेकिन उसकी दुनिया उस द्वीप तक ही सीमित थी। इसी तरह हमारे कुछ बड़े नेता अवसरवादियों, चाटुकारों, विलासिताप्रिय जीवन जीने वालों, लफ्फाजी करने वालों से घिर रहे हैं और उन्हें समाज की असली समस्याओं का अहसास तक नहीं है।

(उमा भारती से हुई पूरी बातचीत पृष्ठ ९ पर)